समृद्ध भारत

द्वारा प्रकाशित

मासिक समाचार–पत्र

संयुक्तांक माह– सितंबर– अक्टूबर

Joint Edition - Month- September-October

शिक्षा कैसी होनी चाहिए ?

'शिक्षा शिक्षार्थियों को सूचनाओं में ही सिमटा देने वाली न होकर, सार्वभौम सत्य का उद्घाटन करते हुए, उनके आध्यात्मिक और सांस्कृतिक उत्थान में सहायक होनी चाहिए, ताकि उनमें सरलता, सहजता, समता, सरसता, समरसता, सहनशीलता और संवेदनशीलता के साथ एकता का भाव जागृत कर उन्हें सुसभ्य बना संस्कारित कर सके, जिससे कि स्वराष्ट्र भी समृद्ध हो सके एवं समस्त संसार सम्पूर्णता की ओर अग्रसर हो सके।''

शिक्षक के गुण :

,,,,,,,,,,,,,

शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक,

व्यावसायिक उत्थान हित पथ दरशाते।

सार्वभौम सत्य सिखलाने में सहाय बन,

स्वराष्ट्र सेवा का पाठ शिक्षक ही हैं पढ़ाते।

सूचनाओं में ही सिमटाकर न रखते वो,

ज्ञान ज्योति–पुंज अन्तस् में हैं जगाते।

शिक्षक की समता तौ कर न सकत कोउ,

अनेकता में 'एकता' का भाव ये जगाते।।

'एकता' विशाल बंसल

बम और बारुद के ढेर पर बैठी मानवता।

सभ्य कहे जाने वाले समाज की वर्तमान अर्थवादी मानसिकता जाने मानवता को कहां ले जा कर छोड़ेगी? आज के दौर में ज्यादातर विकसित देशों ने खुद को प्रभावशाली और ताकतवर प्रदर्शित करने के लिए वीभत्स और भयानक बमों की ऐसी श्रृंखलाएं बना ली है जिनका प्रयोग किया जाए तो पृथ्वी का विनाश निश्चित है। हिरोशिमा और नागासाकी में गिराए गए एक अणु बम की तबाही को दुनिया आज तक भूली नहीं है। यहां तो अमेरिका और रूस 6000 से अधिक परमाणु बम जो उस समय के अणु बम से अधिक शक्तिशाली और विध्वंसक हैं, बनाकर अपने आप को महाशक्ति(सुपर पावर) बताने की दौड़ में लगे रहते हैं। इतने पहली बस नहीं निरंतर अधिक से अधिक खतरनाक प्रक्षेपास्त्र (मिसाइल) जिन्हें हाइपरसोनिक (ध्वनि से भी अधिक तेज गति से चलने वाले) एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक मारक क्षमता वाले। क्या बमों और मिसाइलों की दौड़ मानवता का कोई भला कर सकती है? चीन जैसे कुछ देश तो दरिंदगी की सीमा को इस हद तक पार कर गए हैं खतरनाक विषाणुओं (वायरस) को निर्माण कर अस्त्र के रूप में दुनिया में फैला रहे हैं। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण विश्व की वर्तमान सबसे बड़ी त्रासदी कोविड–19 यानी कोरोना वायरस है। अपने आप को सुपर पावर बनाने की चाहत में चीन का यह चमगादड़ तानाशाह राष्ट्रपति जिनपिंग दरिंदगी की सभी सीमाओं को पार कर चुका है। साम्राज्यवाद की चीनी नीति तो काफी समय से देखी जा रही है। अब नेपाल और पाकिस्तान जैसे देशों को अपनी आर्थिक नीतियों द्वारा पिद्दू बना चुका यह देश मानवता के संपूर्ण विनाश की ओर अग्रसर है। एक और ताइवान भारत के साथ युद्ध की सभी संभावनाओं को पैदा कर दूसरी तरफ साउथ चाइना सी में अपने वर्चस्व को कायम करने के लिए अमेरिका ऑस्ट्रेलिया भारत और जापान के साथ मोर्चा खोलकर खड़ा है। जरा सी गलती एक चूक हुई तो पूरी मानवता खतरे में पड़ जाएगी। अगर कहीं परमाणु युद्ध हो गया तो इसका परिणाम क्या होगा इसकी कल्पना मात्र से हृदय द्रवित हो उठता है। यूनाइटेड नेशन को मानवता पर मंडराते खतरे का तत्काल ही कोई समाधान ढूंढना चाहिए नहीं तो आर्मेनिया और अजरबैजान के बीच का युद्ध भी इस चिंगारी को हवा देने के लिए काफी है। हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि आज मानवता पूरी तरह से परमाणु बमों प्रक्षेपास्त्रों और बारूद के ढेर पर बैठी है, एक चिंगारी और सब खत्म, ना कहीं मानव रहेगा ना मानवता ,ना कहीं विश्व रहेगा ना वसुंधरा। अतः हमारी प्रार्थना है कि विश्व के सभी प्रबुद्ध समाज सेवी संस्थाएं –रेडक्रॉस, और सभी संगठन मिलकर इन सारी परिस्थितियों को सामान्य करें यही अवसर है यही उपाय इसके अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं।

संपादक

तरूण सिंह

वि ेश– समाचार पत्रिका (समृद्ध भारत) को पढ़ने के लिए सर्वप्रथम वेबसाइट naad anusandhan.org को खोलें उसके बाद प्रका ान (publication) के विकल्प को चुनें सामने समाचार पत्रिका दिखाई देगी। यदि आप कम्प्यूटर अथवा लैपटॉप पर खोलेंगे तो रोलर को नीचे करने पर समस्त पृश्ठों को एक के बाद एक सामने पायेंगे । यदि आप स्मार्टफोन के द्वारा प्रका ान के विकल्प तक उपरोक्त कम से ही जायेंगे, परन्तु पत्रिका के अन्य पेजों को खोलने के लिए पत्रिका के प्रथम पेज को एक बार टेप करें उसके बाद डाउनलोड करने का विकल्प सामने आयेगा । डाउनलोड को चुनें, उसके बाद स्लाइड करें । एक के बाद एक पेज सामने आते चले जायेंगे।

संपादकीय विभाग

स्वामी, ुद्रक एवं प्रकाशक

नाद अनुसंधान ट्रस्ट(पंजीकृत)

प्रबंधक– संजय कुमार बनर्जी

तकनीकि सहयोग– सभ्यता सिंह

सम्पादकीय विभाग

संपादक–तरुण सिंह

सह–संपादक–अभय प्रताप सिंह– संस्कृति सिंह

विशेष संवाददाता– तनुज कुमार

समृद्ध भारत जागृति

औषधियों का खजाना – तुलसी

तुलसी का पौधा हिंदू धर्म में बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। ये पौधा अपने वैज्ञानिक, धार्मिक और ज्योतिषीय गुणों के कारण महत्वपूर्ण है। तुलसी के पौधे का महत्व पद्मपुराण, ब्रह्मवैवर्त, स्कंद और भविष्य पुराण के साथ गरुड़ पुराण में भी बताया गया है। इन पौराणिक ग्रंथों के अलावा आयुर्वेद और विज्ञान ने भी इस पौधे को पर्यावरण एवं स्वस्थ्य के लिए महत्वपूर्ण माना है। वहीं अनेक व्रत और धर्म कथाओं में तुलसी का महत्व बताया गया है। भगवान विष्णु और श्रीकृष्ण की कोइ भी पूजा तुलसी दल के बिना पूरी नहीं मानी जाती है।इसलिए ये पौधा घर में होना बहुत जरूरी है। कोरोना कॉल में तुलसी के पौधे को इम्यूनिटी बूस्टर के रूप में देखा जा रहा है तथा इसके काढें पीने की सलाह दी जा रही है।पद्म पुराण के अनुसार तुलसी के दर्शन सारे पाप–समुदाय का नाश हो जाता है ,स्पर्श करने पर शरीर को पवित्र बनाती है, प्रणाम करने पर रोगों का निवारण करती है, जल से सींचने पर यमराज को भी भय पहुँचाती है, आरोपित करने पर भगवान श्रीकृष्ण के समीप ले जाती है और भगवान के चरणों में चढ़ाने पर मोक्षरूपी फल प्रदान करती है, उस तुलसी देवी को नमस्कार है। गरुड़ पुराण के धर्म काण्ड दृ प्रेत कल्प में लिखा है कि तुलसी का पौधा लगाने, उसे सींचने तथा ध्यान, स्पर्श और गुणगान करने से मनुष्यों के पूर्व जन्म के पाप खत्म हो जाते हैं।ब्रह्मवैवर्त पुराण के प्रकृति खण्ड में लिखा है कि मृत्यु के समय जो तुलसी पत्ते सहित जल पीता है वह हर तरह के पापों से मुक्त हो जाता है।स्कन्द पुराण के अनुसार जिस घर में तुलसी का पौधा होता है और हर दिन उसकी पूजा होती है तो ऐसे घर में यमदूत प्रवेश नहीं करते।स्कन्द पुराण के ही अनुसार बासी फूल और बासी जल पूजा के लिए वर्जित हैं परन्तु तुलसीदल और गंगाजल बासी होने पर भी वर्जित नहीं हैं। यानी ये दोनों चीजें अपवित्र नहीं मानी जाती।ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि घर में लगाई हुई तुलसी मनुष्यों के लिए कल्याणकारिणी, धन पुत्र प्रदान करने वाली, पुण्यदायिनी तथा हरिभक्ति देने वाली होती है। सुबह–सुबह तुलसी का दर्शन करने से सवा मासा यानी सवा ग्राम सोने के दान का फल मिलता है। ज्योतिर्विज्ञान के अनुसार जिस घर में तुलसी का पौधा होता है वहां वास्तुदोष नहीं होता है। इस पौधे को घर के पूर्व–उत्तर कोने में लगाना चाहिए। औषधीय गुण हिन्दू धर्म संस्कृति के चिर पुरातन ग्रंथ वेदों में भी तुलसी के गुणों एवं उसकी उपयोगिता का वर्णन मिलता है। अथर्ववेद के अनुसार– श्यामा तुलसी मानव के स्वरूप को बनाती है, शरीर के ऊपर के सफेद धब्बे अथवा अन्य प्रकार के त्वचा संबंधी रोगों को नष्ट करने वाली अत्युत्तम महौषधि है। महर्षि लिखते हैं – तुलसी हिचकी, खाँसी, विष, श्वांस रोग और पार्श्व शूल को नष्ट करती है। यह पित्त कारक, कफ–वातनाशक तथा शरीर एवं भोज्य पदार्थों की दुर्गन्ध को दूर करती है।सिर का भारी होना, पीनस, माथे का दर्द, आधा शीशी, मिरगी, नासिका रोग, कृमि रोग तुलसी से दूर होते हैं।सुश्रुत महर्षि का मत है कि तुलसी, कफ, वात, विष विकार, श्वांस–खाँसी और दुर्गन्ध नाशक है। पित्त को उत्पन्न करती है तथा कफ और वायु को विशेष रूप से नष्ट करती है।भाव प्रकाश के अनुसार तुलसी पित्तनाशक, वात–कृमि तथा दुर्गन्ध नाशक है। पसली का दर्द, अरुचि, खाँसी, श्वांस, हिचकी आदि विकारों को जीतने वाली है। यह हृदय के लिए हितकर, उष्ण तथा अग्निदीपक है एवं कुष्ट–मूत्र विकार, रक्त विकार, पार्श्वशूल को नष्ट करने वाली है। श्वेत तथा कृष्णा तुलसी दोनों ही गुणों में समान हैं।

होम्योपैथिक मत

भारतीय व यूरोपीय दोनों ही होम्योपैथ सिद्धान्त तुलसी को अमृतोपम मानते हैं। बंगाल के डॉ. विश्वास कहते हैं कि तुलसी अनेकानेक लक्षणों में लाभकारी औषधि है। सिर में दर्द, स्मरण शक्ति में कमी, बच्चों का चिड़चिड़ापन, आँखों की लाली, एलर्जी के कारण छीकें आना, नाक बहना, मुँह में छाले, गले में दर्द, पेशाब में जलन, दमा तथा जीर्ण ज्वर जैसे बहुत प्रकार के लक्षणों में तुलसी को होम्योपैथी में स्थान दिया गया है। इसकी 2, 3, 6, 30 तथा 200 वीं पोटेन्सी में प्रयोग कर इन सभी रोगों में लाभ पाए हैं।

अभय सिंह

(नोट – अगले अंक में हम तुलसी के प्रकार व उनका औषधीय महत्व को प्रकाशित करेंगे)

समृद्ध भारत जागृति

भारतीय लोकतंत्र में दिशाहीन विपक्ष

एक समय था जब प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने विपक्ष के नेता अटल बिहारी वाजपेई को जनेवा सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व और पक्ष रखने के लिए भेजा। सम्मेलन में बाजपेई जी को देख कर लोगो को आश्चर्य हुआ । क्योंकि उस समय सत्ता पक्ष और विपक्ष देश के सभी मुद्दों पर जो राष्ट्रीय हित में होते थे उन पर दोनों पक्ष का एक होता था ।
लोकतंत्र में अगर विपक्ष दिशा विहीन हो जाए और सत्ता पाने का लोलुप हो जाए तो समझ लीजिए कि लोकतंत्र के स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ी हो रही है और यह लोकतंत्र के इतिहास में एक घातक संकेत देता है । जिससे सरकारें तानाशाही की ओर बढ़ने लगती हैं भारतीय राजनीति में कुछ ऐसा ही देखने को मिल रहा है जहां विपक्ष किंकर्तव्यविमूढ़ ,पथभ्रष्ट और दिशा विहीन राजनीति की ओर बढ़ गया और वह सत्ता पाने के लिए इतना व्याकुल हो उठा है कि वह राष्ट्रीय हित की सभी मुद्दों को दरकिनार करता जा रहा है यहां तक कि हमारे पड़ोसी देश जिससे हमारी तनातनी रहती है वह भी वर्तमान सरकार को अस्थिर करने के लिए इन विपक्षी पार्टियों को सपोर्ट कर रहे हैं और हमारे विपक्ष के नेता उनसे मिलने में भी पीछे नहीं हट रहे हैं।
भारत सरकार द्वारा 370 धारा को खत्म करके कश्मीर को पूर्णतः भारत में मिलाने के लिए एक सराहनीय कदम उठाया गया। मेरा मानना है कि इसमें विपक्ष को भारत सरकार का खुलकर साथ देना चाहिए था । वहीं दूसरी ओर नागरिकता संशोधन कानून (सीएए), लेकर भारत में एक समुदाय द्वारा काफी विरोध किया गया। विरोध यहां तक कि हुआ कि दिल्ली सहित अनेक शहरों में दंगे भड़के और सरकारी संपत्तियों सहित निजी संपत्तियों को भी नुकसान पहुंचाया गया । अभी हाल में जांच से यह पता चला है कि कुछ विदेशी ,देशी संगठन व राजनीतिक पार्टियां इन दंगों के पीछे खड़ी नजर आ रही हैं । यह साजिश उस समय रची गई जब अमेरिका के राष्ट्रपति भारत के दौरे पर थे। जिससे भारत के प्रधानमंत्री छवि को धूमिल किया जाए मैं मानता हूं यह प्रधानमंत्री की छवि को धूमिल करना नहीं था बल्कि भारत के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर छवि को धूमिल करना था । अगर इन बातों में सच्चाई है तो स्वस्थ लोकतंत्र में विपक्ष का यह कर्तव्य कदापि नहीं होना चाहिए।विपक्ष का एक नया रूप सामने आया है लेकिन हो सकता है यह नया ना हो लेकिन मुझे नया लगा अब राजनीति में वह इतना गिर गए हैं कि समाज में होने वाली घटनाएं, अपराध को भी वह जाति और धर्म के हिसाब से देख रहा हैं अभी कुछ दिनों पहले उत्तर प्रदेश के हाथरस में एक एक लड़की की निर्मम हत्या कर दी गई लड़की दलित समुदाय की थी और लड़के उच्च जाति के। इसके पीछे सच्चाई क्या है यह मुझे तो पता नहीं लेकिन अपराधियों को दंड जरूर मिलना चाहिए और वह भी ऐसा कि कोई भी अपराध करने से डरे । लेकिन हमारे विपक्ष के नेताओं ने उसे खूब राजनीतिक रंग दिया सड़कों से लेकर गांव तक विरोध किय। वही वह उत्तर प्रदेश की अन्य बलात्कार की घटनाओं पर चुप हो जाते हैं क्योंकि वह अपराध विषेश समुदाय के लोगों द्वारा किया जाता है। यहां पर विपक्ष एकदम मौन धारण कर लेता हैं।राजस्थान में लड़कियों के साथ रेप हुआ और उनकी हत एक विशेष समुदाय के द्वारा की गई और वहां पर विपक्ष कुछ नहीं बोला मौन धारण कर लिया। राजस्थान में एक संत की हत्या पर विपक्ष फिर चुप हो जाता है। हाथरस की घटना में प्रारंभिक जांच के अनुसार तो विपक्ष इतना नीचे गिर गया कि वह उत्तर प्रदेश को दंगों में खींचने के लिए झूठी अफवाहें फैलाने लगा और एस.आ.ईटी. द्वारा गठित जांच टीम को यह भी पता चला इसमें कुछ संस्थाएं पैसा दे रही हैं, एक नक्सली महिला का भी इस घटना के पीछे होने का सबूत मिला पूरी मीडिया सरकार की आलोचना करने लगी वही देश के अन्य बलात्कार की घटनाओं पर वह चुप से हो जाती है।
सड़क से लेकर संसद तक विपक्ष की ऐसी भूमिका लोकतंत्र के लिए अच्छी नहीं हो सकती। मुझे तो लगता है कि वह विपक्ष है ही नहीं वह सत्ता पाने के लिए कुछ भी कर सकता है चाहे वह राष्ट्रीय अहित मैं क्यों ना हो।विपक्ष को चाहिए कि वह राजनीति से ऊपर उठकर देश के अंदर और बाहर होने वाली उन सभी घटनाओं का विरोध करें जो उचित हो ।वह हमेशा राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखें। एक सशक्त विपक्ष एक स्वस्थ, स्वच्छ लोकतंत्र के लिए आवश्यक है सशक्त विपक्ष के बिना सरकारे तानाशाह हो सकती हैं ।अतः विपक्ष को हमेशा सरकार को उनके कर्तव्य को याद दिलाते रहना चाहिए जिससे हम एक नई बुलंदियों पर पहुंच सके।

अभय सिंह

हिन्दुओं की आस्था की प्रतीक आरती 'ओम जय जगदीश हरे' के साथ कहीं खिलवाड़ तो नहीं हो रहा ?

हिन्दुओं की आस्था की प्रतीक बन चुकी आरती 'ओम जय जगदीश हरे' के रचयिता पण्डित श्रद्धाराम शर्मा जी, जिन्हें 'श्रद्धाराम फिल्लौरी' या 'श्रद्धाराम फुल्लौरी' के नाम से भी जाना जाता है, का जन्म 30 सितम्बर,1837 ई. को जालंधर (पंजाब) के लुधियाना के पास फिल्लौर नामक ग्राम में एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में माता विष्णु देवी की कोख से हुआ। उनके पिता श्री जयदयालु एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे और ज्योतिष–शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् थे। उन्होंने श्रद्धाराम जी के बारे में भी बचपन में ही बतला दिया था कि यह बालक अपने लघु जीवन में ही चमत्कारिक कार्य करेगा। यही कारण है कि ऐसे पाण्डित्य के धनी पिता के यहाँ जन्मने वाले पण्डित श्रद्धाराम जी को धार्मिक संस्कार तो बचपन से ही विरासत में मिल गए। पण्डित श्रद्धाराम शर्मा जी भी अपने पिता की भाँति एक विद्वान् ज्योतिषी थे, किन्तु एक ज्योतिषी के रूप में उन्हें उतनी प्रसिद्धि नहीं मिली, जितनी उनके द्वारा रचित अमर आरती "ओम जय जगदीश हरे" से मिली। सम्पूर्ण भारत के हिन्दुओं के घर–घर में ही नहीं, विश्वभर में फैले हर हिन्दू–घर में पण्डित श्रद्धाराम शर्मा जी द्वारा लिखित 'ओम जय जगदीश हरे' आरती बहुत श्रद्धा के साथ गाई जाती है।
पण्डित श्रद्धाराम शर्मा जी ने जयदेव कृत 'गीत गोविन्द' के 'दशावतार स्तोत्र' के मुखड़े को आधार बनाकर इस आरती की रचना 1870 ई. में की थी। पण्डित जी सनातन धर्म प्रचारक, ज्योतिषी व स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तो थे ही, संगीतज्ञ होने के साथ–साथ हिन्दी और पंजाबी के प्रसिद्ध साहित्यकार भी थे। वे विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न और ओजस्वी वाणी के धनी थे। अटूट देश–भक्ति के संस्कार होने के कारण वीर रस से ओत–प्रोत कथाओं का जब वे गायन करते थे तो वैसा दृश्य ही साकार कर देते थे। वाक् पटुता के बल पर उन्होंने पंजाब में नवीन सामाजिक चेतना एवं धार्मिक उत्साह जगाया था। आगे चलकर इसी से आर्य समाज के लिये पहले से निर्मित एक उर्वर भूमि मिली।बचपन से ही श्रद्धाराम शर्मा जी की ज्योतिष और साहित्य के विषय में गहरी रुचि थी। उन्होंने वैसे तो किसी प्रकार की शिक्षा हासिल नहीं की थी, परन्तु उन्होंने सन् 1844 में मात्र सात वर्ष की अल्पायु में ही गुरुमुखी लिपि सीख ली थी। दस साल की उम्र में संस्कृत, हिन्दी, फारसी, पर्शियन (पारसी) तथा ज्योतिष आदि की पढ़ाई शुरू की और कुछ ही वर्षों में वे इन सभी विषयों में निष्णात हो गए। उनका विवाह महताब कौर नामक एक सिक्ख महिला के साथ हुआ था। उनका निधन 24 जून 1881 ई. को लाहौर (पाकिस्तान) में हुआ। अस्तु।
यहाँ तक तो बात रही उनकी जीवनी से सम्बन्धित। अब बात करते हैं इस आरती में दिखते उस झोल की या घालमेल की, जो कम से कम मुझे तो विगत सदी के सातवें दशक के उत्तरार्द्ध से ही सालता आ रहा है।
जैसा कि अमूमन सभी रचनाकार अपनी रचना में अधिकांशतया अन्तिम पंक्तियों में ही अपने नाम की छाप लगाते हैं, उस दृष्टि से तो 'श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा' पंक्तियों में ही श्रद्धाराम जी का नाम 'श्रद्धा' शब्द में ही उजागर हो जाता है। और यदि यहाँ यह नाम उजागर हो जाता है तो आजकल बहुधा अन्तिम अन्तरे के रूप में गाए जाने वाली पंक्ति 'कहत शिवानन्द स्वामी, भजत हरिहर स्वामी मनवांछित फल पावे' पंक्ति आखिर क्यों जुड़ी और कब जुड़ी? यह प्रश्न मेरे जहन में 1977 से अब तक दौड़ रहा है। मैं उस समय पी–एच. डी. कर रहा था और इस आरती के रचनाकार पण्डित श्रद्धाराम जी के नाम से मेरा पहला–पहला परिचय भी तभी हुआ। बहुत समय तक मैंने भी कोई विशेष ध्यान न देते हुए ऐसा भी मान लिया कि हो सकता है कि शिवानन्द स्वामी और हरिहर स्वामी जैसी कोई ऐसी महान् विभूतियाँ रही हों जिनके प्रति उनके मन में विशेष श्रद्धा–भाव रहा हो और उन्होंने स्वयं ही इन नामों का उल्लेख किया हो, किन्तु आज जब रचनाओं की चोरी की घटनाओं को देखता हूँ, थ्जनसे कि फिल्म–जगत तक अछूता नहीं रहा है, तब मन बार–बार कह उठता है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि आरती की विश्वस्तरीय ख्याति से प्रभावित होकर शिवानन्द और हरिहर नामक किन्हीं कुटिल व्यक्तियों ने जान बूझकर अपने नामों की छाप इस आरती के साथ जोड़ दी हो। निश्चित ही यह एक शोध का विषय है। अगर यह अन्तिम अन्तरा बाद में जान–बूझकर जोड़ा गया है तो इसको तमाम धार्मिक पुस्तकों व आरती–संग्रहों से हटाया जाना भी बहुत आवश्यक है और इनका गायन भी बन्द होना चाहिए। उनके द्वारा वास्तव में आरती कहाँ तक लिखी गई, इस पर गम्भीरतापूर्वक शोध नितान्त आवश्यक है। सन् 1870 में रचित यह आरती 2020 में अपनी डेढ़ सौ वर्ष की यात्रा सम्पन्न कर चुकी है। साथ ही श्रद्धाराम जी की 30 सितम्बर को जयन्ती का भी पावन अवसर हैय ऐसे में दूध का दूध और पानी का पानी हो ही जाना चाहिए।

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, मथुरा

समृद्ध भारत नाद

आवश्यक सूचना

समृद्ध भारत के समस्त पाठकों को सूचित करना है कि तकनीकी व्यवधान के कारण हम सितंबर माह का अंक प्रकाशित नहीं कर सके। इस व्यवधान हेतु हम सभी पाठकों से क्षमा प्रार्थी है।

सम्पादक- समृद्ध भारत

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी–माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर हे हरि, डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक

© Can Stock Photo - csp6156992

माखनलाल चतुर्वेदी

समृद्ध भारत

अनुसंधान

कोविड–19 के कारण संगीत के क्षेत्र में उत्पन्न संकट और समाधान

चीन जैसे अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी और अवसरवादी देश के वुहान शहर की लैब में मानव–निर्मित नोवल वायरस कोविड–19 (कोरोना) के विस्तार ने न केवल किसी क्षेत्र विशेष के लोगों को, बल्कि लगभग समूची दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया है। बीमारियाँ बहुत–सी आईं और आती रहती हैं, किन्तु ऐसी वैश्विक महामारी आज तक हम लोगों ने नहीं देखी। चूँकि यह वायरस प्राकृतिक न होकर मानव –निर्मित है, अतः इसकी कोई वैक्सीन बनने की भी कम ही सम्भावना है। इस वायरस को तैयार करने वाले डॉक्टर्स व वैज्ञानिकों की पूरी की पूरी टीम की ही चीन द्वारा हत्या कर देने के कारण भी इसके निर्माण से सम्बन्धित जानकारियाँ नहीं मिल सकतीं। ऐसे में इस महामारी के संक्रमण से बचाव हेतु कुछ आवश्यक उपाय विश्व स्वास्थ्य संगठन (ॅभ्व्) द्वारा सुझाए गए हैं, वहीं भारत सरकार के आयुष मन्त्रालय द्वारा भी बहुत से सुझाव व निर्देश जारी किए गए हैं, जिनमें सर्वप्रमुख उपाय है कि घर से बाहर ही न निकलें। यदि आवश्यक रूप से निकलना ही पड़े तो घर से बाहर निकलते समय मुँह और नाक को अच्छी तरह किसी अँगोछे या थ्बम बवअमत से ढँकना अथवा मास्क (डें) लगाकर रखना, हाथों पर सेनिटाइजर (ैंदपजप्रमत) मलकर ही किसी सामान या हैंडल आदि को छूना और हर दूसरे व्यक्ति से कम–से–कम दो गज की दूरी बनाकर रखना(ैवबपंस कपेजंदबपदह) सबसे अधिक आवश्यक है। यदि घर पर भी हैं तो छींकने या खाँसने से पहले मुँह पर रूमाल या कपड़ा लगाना, बार–बार साबुन से हाथ धोना, फिर नल की टोंटी को पुनः हाथ से न छूना, गीले हाथों को किसी कपड़े से न पोंछकर हवा में ही सुखाना जैसी सावधानियाँ बरतने के अतिरिक्त दिन में तीन–चार बार गर्म पानी में नमक डालकर गरारे (ळंतहसम) करना, गर्म पानी की भाप (ैजमंउ) लेना और काढ़ा, गर्म पानी, गर्म दूध और चाय का सेवन आदि करते रहने के निर्देश हैं। आयुर्वेदिक उपाय काढ़े के अतिरिक्त होमियोपैथी की ब्‌उचीवतं 1ड और ।तेमदपबनउ। सइनउ 30 भी ली जा सकती हैं। अस्तु।

कोविड–19 महामारी के कारण सभी मन्दिरों आदि धार्मिक स्थलों के धार्मिक कार्यक्रम, रामलीला, रासलीला, भगत, स्वांग, नौटंकी, रसिया दंगल, देवी जागरण जैसे कार्यक्रम, शादी–विवाह आदि सामाजिक कार्यक्रम और शैक्षिक आयोजनों तक पर ग्रहण लग गया है। स्कूल, कॉलेज, कोचिंग स्कूल्स, योग केंद्र और जिम जैसे सभी संस्थानों पर भी ताले डाल दिए गए हैं।इस महामारी के कारण समस्त मानव – जाति का अस्तित्त्व ही संकट में पड़ गया है। क्या सामाजिक, क्या आर्थिक, क्या क्या धार्मिक और क्या शैक्षिक, हर दृष्टि से दुनिया को इस आपदा को झेलना पड़ रहा है।

ऐसी स्थिति में संगीत जैसी कला भी इससे कैसे अछूती रहती? संगीत के साथ तो यह और परेशानी है कि यह तो है ही भीड़भाड़ इकट्ठा कर देने वाली कला। कलाकार के आगे अगर भीड़ न हो तो वह पहले ही आधा रह जाएगा। कार्यक्रम सामाजिक हो, राष्ट्रीय हो, धार्मिक हो अथवा किसी भी अन्य प्रकार का, कलाकार को बस मंच चाहिए। और मंच के कार्यक्रम की शोभा दर्शक व श्रोतागण ही होते हैं। कोरोना काल में शादी–विवाह, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और सभी प्रकार के मंचीय कार्यक्रमों पर रोक लग जाने के कारण सभी प्रकार के मंचीय कलाकार सर्वाधिक प्रभावित हुए हैं। इनके साथ–साथ ऑर्केस्ट्रा और ब्रास बैंड वाले, शहनाई पार्टी वाले, माइक, डीजे, और लाइट आदि साज–सजावट के कार्यों में लगे भी हजारों–लाखों लोगों की रोटी इस कारण छिनी है।शैक्षिक संस्थानों की सेमिनार (ैमउपदंत) और सिम्पोजियम (ैलउचवेपनउ) का स्थान भी ॅमइपदंत और टपतजनंस ब्वससवुनपनउ ने ले लिया।

लॉक डाउन काल की ही भाँति अब पीरियड में भी हर दिन हो रहे हैं दर्जनों–दर्जनों गायन, वादन, नृत्य के ऑनलाइन कार्यक्रम और व्याख्यानमालाएँ। शास्त्रीय संगीतज्ञों के कार्यक्रमों की तो ऐसी बाढ़ आई है कि उनको देखना तक असम्भव हो रहा है। शास्त्रीय संगीत के निश्चित श्रोता–वर्ग के लिए तो यह बहुत ही मुश्किल है कि वह एक ही समय में कैसे सुने या देखे एकसाथ इतने कार्यक्रम? बिना देखे–सुने ही अधिसंख्य फेसबुकिया मित्रगण वाह–वाह ! बहुत खूब ! क्या बात है ! गजब ! अर्रे वाह ! अहा ! अद्‌भुत ! बहुत शानदार ! मनोरम प्रस्तुति ! मनहरण प्रस्तुति ! ।ूंपदह ! छपबम च्मतवितउंदबम ! डंतअमसससवने ! थ्ंदजेंजपब ! थ्ंइनसससवने ! जैसे प्रशंसात्मक शब्द लिखकर और विभिन्न इमोजिज (म्उवरपे) के माध्यम से भिन्न–भिन्न प्रकार की मुखाकृतियों, गन्धहीन बुके, पुष्प, ध्वनिविहीन तालियाँ आदि भेजकर, कलाकारों का मन बहला रहे हैं और वे भी बेचारे मजबूरी के मारे इन्हें ही ऐसे सधन्यवाद प्राप्त कर सबकी बलैयाँ ले रहे हैं मानों उनको क्या कुछ न मिल गया ! कोई कुछ भी कहे, मंचीय कार्यक्रम का आनन्द तो ये दे ही नहीं सकते। मंचीय कार्यक्रमों की तुलना में वेबिनार पर आयोजित कार्यक्रमों में निश्चय ही उतना तो फर्क नजर आएगा ही जितना कि बहुत–से सौन्दर्य–प्रसाधनों को कम कर देने के कारण किसी सुहागिन के बेवा (विधवा स्त्री) हो जाने पर सौन्दर्य में पड़ जाता है।

कोरोना काल ने संगीत के भविष्य को बहुत प्रभावित किया है। भावी पीढ़ी अर्थात् बच्चों और युवाओं पर ही किसी भी राष्ट्र या उसकी कला, संस्कृति, साहित्य और संगीत आदि के संरक्षण–संवर्द्धन और प्रचार–प्रसार की जिम्मेवारी होती है। कोरोना के संकट से संगीत की शिक्षा ले रहे शिक्षार्थियों का जितना अहित हुआ है और हो रहा है, उसकी कल्पना करके ही मन सिहर उठता है। मुझे स्वयं संगीत–शिक्षा प्रदान करते हुए 50 वाँ वर्ष चल रहा है और वह भी अब पूर्ण होने को ही है। आज तक सीना–ब–सीना तालीम देने की आदत के कारण न केवल मेरे, बल्कि मेरे शिष्य–वर्ग के हौसले भी पस्त हैं। संगीत की ऑनलाइन शिक्षा लेना और देना कितना दुष्कर है, यह हर गुरु भी अनुभव कर रहा है और हर शिष्य भी। अगर यह भी मान लिया जाए कि पुराने शिष्य तो ऑनलाइन सीख ही सकते हैं तो नए कैसे शुरू कर पाएँगे? कम–से–कम कुछ दिन का तो गुरु का सान्निध्य मिले। लेकिन ऐसी कोई भी संभावनाएँ अभी दूर–दूर तक नहीं दिख रहीं।फिर भी विकल्प के तौर पर व्हाट्सएप (ॅींजेंचच) या टेलीग्राम (ज्मसमहतंउ) के माध्यम से ऑडियो या वीडियो भेजकर या मँगाकर अकेले अथवा ैालचम और ॅववउ जैसे ।चचे डाउन लोड कर उनसे 50 और 100 छात्र–छात्राओं तक को भी एकसाथ जोड़ा और सिखाया जा सकता है। लेकिन इस गुरुमुखी विद्या को जो ठेस लगी है, वह बेहद दुःखद है। पर संगीत को बचाए रखने के लिए समझौता तो करना ही होगा और जब तक यह संकट टल नहीं जाता, हाथ पर हाथ रखकर न बैठकर जो भी साधन उपलब्ध हैं, उनसे काम चलाना होगा।

कोविड–19 से जहाँ समूचा विश्व त्रस्त है, वहीं इसके कुछ लाभ भी देखने को मिले हैं।इसमें कोई शक नहीं कि कोरोना के संकट ने समूची दुनिया को जिस तरह प्रभावित किया है, ऐसा आज तक वैश्विक स्तर पर देखने में कभी नहीं आया। विश्वभर के लोग महीनों से जेलों के रूप में तब्दील हो चुके अपने –अपने घरों में ही कैद होकर रह गए हैं। लॉक डाउन के बाद अब अनलॉक की प्रक्रिया भी पूर्ण हो चुकी है, उसके बाद भी हर रोज कोरोना पॉजिटिव केसों के बढ़ते हुए आँकड़ों के कारण लोग घरों से बाहर नहीं निकल पा रहे। सबके दिमाग में बस एक ही बात घर की हुई है– ''सावधानी हटी, दुर्घटना घटी।'' अस्तु।

मेरा यह सौभाग्य रहा है कि मुझे अजीवन कारावास में निरुद्ध बहुत सारे बन्दियों से मिलने और उनके विचारों से या उनकी नृत्य–संगीत अथवा चित्रकला जैसी प्रतिभा से रू–ब–रू होने के न केवल अवसर मिले हैं, बल्कि जेलों के विशिष्ट अतिथि भवनों में ठहरने, कैदियों के हाथों से प्रेम से भोजन करने, उनके मध्य मोटिवेशनल स्पीच देने व लेक्चर डेमोंस्ट्रेशन आदि देने जैसे भी अवसर प्राप्त हुए हैं। यही नहीं, मैंने उनकी परीक्षाएँ भी ली हैं और उनकी ही क्या, जेलरों तक की परीक्षा लेने के सुअवसर भी मुझे प्राप्त हुए हैं। यह मैं इसलिए बतलाना चाहता हूँ कि एकान्तवास में ही हर मनुष्य को आत्म–चिंतन, आत्म–मंथन और आत्म–अध्ययन का सुअवसर मिलता है, जो आत्मोन्नति व आध्यात्मिक उन्नति के लिए कितना आवश्यक है, इसे जानने के लिए किसी योगी अथवा सन्त–महात्मा या फिर कारावास झेल रहे किसी कैदी से अधिक अच्छा कौन बता सकता है? नोवल वायरस कोविड –19 से उत्पन्न इस संकट ने यदि दुनिया को बहुत कष्ट दिया है तो उसके साथ–साथ बहुत कुछ सुअवसर भी प्रदान किए हैं। प्रकृति के चराचर जीव–जन्तुओं, पशु–पक्षियों और कीट–पतंगों तक को सजने–सँवरने का अवसर भी दिया है। लम्बे समय से जल, वायु और ध्वनि–प्रदूषणों के साथ–साथ वैचारिक प्रदूषण की भी मार झेल रही प्रकृति कोरोना के कारण लगे लॉक डाउन काल में मानों अपने आपको सजाने–सँवारने में लीन हो गई, जिसके सुपरिणाम भी दुनिया देख ही रही है। विगत एक–दो दशकों से गुम हुई चिड़ियों की चहचहाहट, पृथ्वी के वायुमण्डल में छाई रहने वाली कुहासी (धुंधलाहट) बहुत कुछ छँट चुकी है। आकाशीय नीलिमा पुनः खोए स्वरूप को पाती नजर आने लगी है, जो एक सुखद संकेत है।प्रकृति ही क्या, इंसानी जिन्दगी भी रोजमर्रा की भागम–भाग से इतनी प्रभावित हो गई थी कि अपने या अपने घर के लोगों के लिए भी सोचने तक की आदमी को फुर्सत नहीं थी, जो कोरोना ने दे दी। यदि आम गरीब और मजदूर–वर्ग की बात छोड़ दें तो नकारात्मक सोच वालों ने जहाँ इस समय को रो–रोकर काटा है और काट रहे हैं, वहीं सकारात्मक सोच वाले व्यक्तियों ने इसका भरपूर सदुपयोग किया और कर रहे हैं।

जिस प्रकार देश और दुनिया की तमाम जेलों में निरुद्ध कैदियों ने न केवल साहित्य, काव्य, चित्र और संगीत जैसी कलाओं में कारावास भोगते हुए भी उत्कृष्ट योगदान दिया है बल्कि आज भी दे रहे हैं, ठीक उसी प्रकार देशभर के तमाम कलाकारों ने इस कोरोना–काल में भी जो कुछ दिया है, वह आश्चर्य में डालने वाला है। इस लॉकडाउन की अवधि में जितना काव्य, साहित्य व संगीत–सृजन हुआ है, वह अपने आप में आश्चर्यजनक है। कोरोना पर ही अनगिनत गीत और लोक गीत रचे गए और कविताएँ भी। यह क्रम आज भी बदस्तूर जारी है। मैंने स्वयं कोरोना पर लोक गीत, कोविड चालीसा, कोविड उन्नीसा, कोविड अष्टक जैसी ढेरों रचनाओं के अतिरिक्त अनगिनत छन्द, ब्रज भाषा व खड़ी बोली में कविताएँ, नाटक, कोरोना राग आदि इतनी रचनाओं का सृजन किया है कि कोरोना पर ही एक पुस्तक बन जाएगी।इस प्रकार हम अन्दाज लगा सकते हैं कि देशभर में कितना सृजनात्मक कार्य हुआ होगा और आज भी हो रहा है। कोरोना महामारी से हमारा देश और सम्पूर्ण विश्व शीघ्रातिशीघ्र मुक्त हो और हम सब पहले की तरह खुशहाल हों, ऐसी मंगल कामना करता हूँ।

सर्व मंगलमस्तु ! सर्व शुभमस्तु!!

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक', मथुरा

INVESTMENT OPTIONS

Today, there are several investment avenues for an individual to choose from. The investment products are either debt-based (where returns are fixed), or equity-linked (where returns are market-linked). Let's look at these products in terms of their features. Bank fixed deposits (FDs). They offer fixed and assured returns, but with the interest income being fully taxable, the post-tax and inflation-adjusted returns are very low. Although they are fairly safe, spread your FDs over several banks rather than invest a big sum in one bank. The tenure varies from one month to 10 years. At best, FDs help you preserve capital. So, mutual funds needed to meet goals in the next 2-3 years may be put into them. Bonds offered by the Reserve Bank of India (RBI) or the government are considered to be the safest fixed income investment options offering decent returns. As they are not very liquid, consider investing in them only up to the extent you are comfortable with.

SMALL SAVINGS

These instruments mainly comprise fixed-income products such as Public Provident Fund (PPF), National Savings Certificate (NSC), time deposits or the Monthly Income Scheme (MIS). PPF, which comes with a 15-year tenure and an extension option, offers 7.1 per cent tax-free return. It remains your best bet to accumulate a tax-free corpus for meeting your long-term needs. NSCs and MIS suit those who want assured returns over the medium term. All these products are debt-based.

EQUITIES

To start investing directly in stocks, choose the ones that either have large market caps or feature in an index. They have high liquidity and are less volatile than others. Weigh stocks on the basis of ratios such as price earnings, operating margins, return on equity and capital, among others. Stick with the company for the long term and do not exit - even in downturns - until the reasons for which the stock was bought do not exist anymore, or something has gone fundamentally wrong with the stock.

MUTUAL FUNDS (MFs)

The reasons for their popularity are simplicity, affordability, professional management, diversification and liquidity. There are equity MFs for those willing to bear greater risk, debt or gilt schemes for the risk averse, and balanced schemes for those willing to take on a bit of risk. Most MFs offer systematic investment plans (SIPs), systematic withdrawal plans (SWPs), monthly income plans (MIPs) and the dividend reinvestment option to suit individual needs. Beginners can start investing in MFs through SIPs in either equity or debt schemes, depending on how far the goal is and the investor's risk appetite. As equities tend to beat inflation over the long term, it makes sense to invest in them for longer term goals. Ideally, when you begin, go for large-cap or index funds. Select schemes that have performed consistently over the long term. Similarly, choose debt funds for your shortto medium-term goals.

GOLD

Buying coins and bars is the right way to go about investing physically in the yellow metal as, unlike in the case of jewellery, there is neither any wastage nor any making charges. Coins and bars have better resale value as they come with higher purity. But, the best way to invest in gold is through exchange-traded funds (ETFs), which is a cost-efficient way to access the bullion market. Similar to owning the units of an equity MF, units in an ETF can be easily bought or sold. One may also invest in gold MFs. Put away 10-15 per cent of your investable surplus in gold.

REAL ESTATE

Although real estate as an asset class is highly illiquid and requires a lot of capital, it is a useful hedge against inflation. Real estate prices are also less volatile than other investments. Also, if you invest in real estate - especially residential property - for the long term, the huge demand for quality housing in India will ensure that your capital values will appreciate substantially.

ALTERNATE INVESTMENTS

Certain investments, such as precious metals, structured products (financial derivatives), private equity, agricultural commodities, green funds, and art and wine are outside the traditional asset classes of equity or debt. As any organised market is absent for the trading of such products, liquidity is low and, therefore, the risk-return ratio is high.

BASIC KNOW HOW

Bank FDs offer fixed and assured returns, but with the interest income being fully tax-able, the post-tax and inflation-adjusted returns are very low. For beginners, investing in MFs can start with systematic investment plans (SIPs). While investing directly in stocks, choose the ones that either have large market caps or feature in an index. The best way to invest in gold is through exhange-traded funds (ETFs) route. While real estate as an asset class is highly illiquid and requires a lot of capital, it is also a useful hedge against inflation.

Source: - www.franklintempletonindia.com

समृद्ध भारत ऊर्जा

कंगना और महाराष्ट्र सरकार आमने–सामने

सुशांत सुसाइड केस को लेकर के शिवसेना नेता संजय राउत और कंगना रनोट के द्वारा दिए बयानों का खामियाजा कंगना रनोट को भुगतना पड़ा। बीएमसी द्वारा अभिनेत्री कंगना रनोट के बांद्रा स्थित बंगले के अवैध निर्माण को 9 सितंबर 2020 को ढहा दिया गया।आगे की कार्रवाई के लिए मुंबई हाईकोर्ट में अगले आदेश तक रोक लगा दी है ।

महाराष्ट्र सरकार के इस कदम को अभिनेत्री द्वारा साजिश करार दी गई और कहा गया है कि यह महाराष्ट्र सरकार के बदले की भावना को उजागर करता है। विवाद उस समय शुरू हुआ जब कंगना ने मुंबई की तुलना पीओके फं की थी उनका कहना था कि उन्हें मूवी माफियाओं से ज्यादा मुंबई पुलिस से डर लगता है । बाद में केंद्रीय मंत्रालय ने उन्हें वाई प्लस की सुरक्षा दी थी ।

हालांकि बीएमसी द्वारा की गई कार्रवाई हाईकोर्ट के आदेश के विरुद्ध थी क्यौकि मुंबई हाई कोर्ट ने 30 सितंबर तक मुंबई में किसी भी प्रकार की तोड़फोड़ की कार्रवाई पर रोक लगा रखी थी। बीएमसी के पास इस तरह के लगभग 94हजार शिकायतें लेकिन जिस तरह से उसने कंगना के कार्यालय को तोड़ने की कार्रवाई की है उस पर सवाल उठाने लाजमी है । मुंबई में और भी अवैध निर्माण हैं उसे गिराने के लिए अधिकारियों ने इस तरह के कदम क्यों नहीं उठाया।महाराष्ट्र के नेता प्रतिपक्ष देवेंद्र फडणवीस इसे कायरता पूर्वक कार्रवाई करार देते हुए कहा कि ऐसा महाराष्ट्र के इतिहास में आज तक कभी नहीं हुआ। रांकपा के अध्यक्ष शरद पवार कहां की इस कार्रवाई में कगना को अनावश्यक रूप से बोलने का मौका दिया हैं।

कंगना ने अपना गुस्सा उतारते हुए सीधे मुख्यमंत्री को निशाना बनाते हुए कहा कि ''उधव ठाकरे तुम्हें क्या लगता है । फिल्म माफिया के साथ मिलकर मेरा घर तोड़कर तुम मुझसे बहुत बड़ा बदला लिया है । आज मेरा घर टूटा है कल तुम्हारा घमंड टूटेगा । यह वक्त का पहिया है, याद रखना हमेशा एक जैसा नहीं रहता । मुझे लगता है कि तुमने मुझ पर बहुत बड़ा एहसान किया है''।

कुछ भी हो, गलत हुआ है या सही हुआ यह हम नहीं जानते लेकिन करोना काल में मुंबई में जो हुआ वह गलत हुआ। महाराष्ट्र हाई कोर्ट के आदेश के विरुद्ध कंगना के घर में तोड़फोड़ करना वह भी बिना उनके उपस्थिति के एवं मुंबई एयरपोर्ट के बाहर बिना मास्क और सामाजिक दूरी के सैकड़ों लोगों द्वारा विरोध और समर्थन में नारे लगाने व पुलिस के द्वारा उन पर कोई कार्यवाही ना किया जाना यह मुंबई शासन, प्रशासन को शक के घेरे में खड़ा करता है।

संवाद सूत्र

कँगना रनौत के ऑफिस पर बी.एम.सी. की कार्यवाही के बाद का चित्र।

कलयुग के भगीरथ , आधुनिक सुधारवादी भविष्यदृष्टा – महाराजा गंगा सिंह

कलियुग के भागीरथ व बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह राठौड़ जी को उनकी 140वीं जयंती पर हार्दिक नमन करते हैं।महाराजा गंगा सिंह 1888 से 1943 तक बीकानेर रियासत के महाराजा थे। उन्हें आधुनिक सुधारवादी भविष्यद्रष्टा के रूप में याद किया जाता है। पहले महायुद्ध के दौरान 'ब्रिटिश इम्पीरियल वार केबिनेट' के अकेले गैर–अँगरेज सदस्य थे। महाराजा गंगा सिंह का जन्म 13 अक्तूबर, 1880 को बीकानेर में हुआ था। उनके पिता का नाम महाराजा लालसिंह था। गंगासिंह, बीकानेर के महाराजा लालसिंह की तीसरी संतान थे और डूंगर सिंह के छोटे भाई थे। जो बड़े भाई के देहांत के बाद 1887 में 13 दिसम्बर को बीकानेर–नरेश बने। उनका पहला विवाह प्रतापगढ़ राज्य की बेटी वल्लभ कुंवर से 1897 में, और दूसरा विवाह बीकमकोर की राजकन्या भटियानी जी से हुआ। जिनसे इनके दो पुत्रियाँ और चार पुत्र हुए।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा पहले घर ही में हुई और फिर इसके बाद में अजमेर के मेयो कॉलेज में 1889 से 1894 के बीच हुई। ठाकुर लालसिंह के मार्गदर्शन में 1894 से 1898 के बीच उन्हे प्रशासनिक प्रशिक्षण मिला।1898 में गंगा सिंह को फौजी–प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए देवली रेजिमेंट भेजा गया जो उस समय ले.कर्नल बैल के अधीन देश की सर्वोत्तम मिलिट्री प्रशिक्षण रेजिमेंट मानी जाती थी।

पहले विश्वयुद्ध में एक फौजी अफसर के बतौर गंगासिंह ने अंग्रेजों की तरफ से 'बीकानेर कैमल कार्प्स' के प्रधान के रूप में फिलिस्तीन, मिश्र और फ्रांस के युद्धों में सक्रिय भूमिका निभायी। 1902 में वे प्रिंस ऑफ वेल्स के और 1910 में किंग जॉर्ज पंचम के ए. डी. सी. भी रहे।

महायुद्ध समाप्त होने के बाद अपनी पुश्तैनी बीकानेर रियासत में लौट कर उन्होंने प्रशासनिक सुधारों और विकास की गंगा बहाने के लिए जो काम किये वे किसी भी लिहाज से साधारण नहीं कहे जा सकते। 1913 में उन्होंने एक चुनी हुई जन–प्रतिनिधि सभा का गठन किया, 1922 में एक मुख्य न्यायाधीश के अधीन अन्य दो न्यायाधीशों का एक उच्च–न्यायालय स्थापित किया और बीकानेर को न्यायिक–सेवा के क्षेत्र में अपनी ऐसी पहल से देश की पहली रियासत बनाया। अपनी सरकार के कर्मचारियों के लिए उन्होंने 'एंडोमेंट एश्योरेंस स्कीम' और जीवन–बीमा योजना लागू की, निजी बैंकों की सेवाएं आम नागरिकों को भी मुहैय्या करवाईं, और पूरे राज्य में बाल–विवाह रोकने के लिए शारदा एक्ट कड़ाई से लागू किया। 1927 में वे 'सेन्ट्रल रिक्रूटिंग बोर्ड ऑफ इण्डिया' के सदस्य नामांकित हुए और उसी वर्ष उन्होंने 'इम्पीरियल वार कांफ्रेंस' में, 1929 में 'पेरिस शांति सम्मलेन' में और 'इम्पीरियल वार केबिनेट' में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

1920 से 1926 के बीच गंगा सिंह 'इन्डियन चेंबर ऑफ प्रिन्सेज' के चांसलर बनाये गए। इस बीच 1924 में 'लीग ऑफ नेशंस' के पांचवें अधिवेशन में भी इन्होंने भारतीय प्रतिनिधि की हैसियत से भाग लिया।

ये 'श्री भारत–धर्म महामंडल' और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संरक्षक, 'रॉयल कोलोनियल इंस्टीट्यूट' और 'ईस्ट इण्डिया एसोसियेशन' के उपाध्यक्ष, 'इन्डियन आर्मी टेम्परेन्स एसोसियेशन' 'बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी' लन्दन की 'इन्डियन सोसाइटी' 'इन्डियन जिमखाना' मेयो कॉलेज, अजमेर की जनरल कांसिल, 'इन्डियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट' जैसी संस्थाओं के सदस्य और, 'इन्डियन रेड–क्रॉस के पहले सदस्य थे।

उन्होंने1899–1900 के बीच पड़े कुख्यात छप्पनिया काल' की हृदय–विदारक विभीषिका देखी थी, और अपनी रियासत के लिए पानी का इंतजाम एक स्थाई समाधान के रूप में करने का संकल्प लिया था और इसीलिये सबसे क्रांतिकारी और दूरदृष्टिवान काम, जो उनके द्वारा अपने राज्य के लिए किया गया वह था– पंजाब की सतलुज नदी का पानी 'गंग–केनाल' के जरिये बीकानेर जैसे सूखे प्रदेश तक लाना और नहरी सिंचित–क्षेत्र में किसानों को खेती करने और बसने के लिए मुफ्त जमीनें देना।

श्रीगंगानगर शहर के विकास को भी उन्होंने प्राथमिकता दी वहां कई निर्माण करवाए और बीकानेर में अपने निवास के लिए पिता लालसिंह के नाम से 'लालगढ़ पैलेस' भी बनवाया। बीकानेर को जोधपुर शहर से जोड़ते हुए रेलवे के विकास और बिजली लाने की दिशा में भी वे बहुत सक्रिय रहे। जेल और भूमि–सुधारों की दिशा में उन्होंने नए कायदे कानून लागू करवाए, नगरपालिकाओं के स्वायत्त शासन सम्बन्धी चुनावों की प्रक्रिया शुरू की, और राजसी सलाह–मशविरे के लिए एक मंत्रिमंडल का गठन भी किया।

1933 में लोक देवता रामदेवजी की समाधि पर एक पक्के मंदिर के निर्माण का श्रेय भी उन्ही को जाता है।

1880 से 1943 तक उन्हें 14 से भी ज्यादा कई महत्वपूर्ण सैन्य–सम्मानों के अलावा 1900 में 'केसरेहिंद' की उपाधि से विभूषित किया गया था।1918 में उन्हें पहली बार 19 तोपों की सलामी दी गयी,वहीं 1921 में दो साल बाद उन्हें अंग्रेजी शासन द्वारा स्थाई तौर पर 19 तोपों की सलामी योग्य शासक माना गया था ।

2 फरवरी 1943 को बंबई में महाराजा गंगा सिंह अपने जीवन की अंतिम सांस ली ऐसे महाराजा को शत–शत नमन।

अभय सिंह

समृद्ध भारत वसुंधरा

भारत चीन टकराव

अप्रैल माह से ही एलएसी भारत चीन सीमा पर चीन के क्षेत्र में सैनिक टुकड़ियों, बख्तरबंद गाड़ियों और ट्रकों की संख्या में भारी इजाफा देखा गया। इसके बाद से मई के महीने में सीमा पर चीनी सैनिकों की गतिविधियां देखी गई ।साम्राज्यवादी चांडाल चीन शुरू से ही पूर्वी लद्दाख अरुणाचल प्रदेश आदि भारतीय क्षेत्रों पर अपनी गिद्ध दृष्टि जमाए रहता है। डोकलाम विवाद में पीछे हटने को मजबूर होने के आज से ही चीन में कुछ बौखलाहट देखी गई है ।एल ए सी को अपने हिसाब से परिभाषित करने की चीन की मंशा पुरानी है। मई में सीमा पर गतिविधियां बढ़ाने के बाद धीरे–धीरे चीन की सेना आगे रही। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए भारत ने भी सीमावर्ती क्षेत्र में सेना की नियुक्ति बढ़ा दी। गलवान घाटी में भारत और चीन के बीच में हिंसक झड़प जिसमें चीन के चांडाल लोहे की रॉड में नुकीली कीलों आदि हथियारों से लैस होकर विवाद के लिए तैयार हो चुके थे ।बातचीत के दौर में यह निर्धारित होने के बाद कि चीन के सैनिक आगे बढ़कर लगाए अपने टैंटों को वापस लेकर जाएंगे परंतु शाम तक वस्तु स्थिति में परिवर्तन नहीं होता देखकर बिहार रेजिमेंट के कमांडर संतोष बाबू दो सैनिकों के साथ स्थिति का निरीक्षण करने गए। पहले से तैयार धूर्त चीनी चांडालो ने संतोष बाबू को पकड़ लिया। यह देखकर बिहार रेजिमेंट के जवान तुरंत मौके पर पहुंचकर पहले से तैयार चीनी चांडालों की गर्दन मरोड़नी शुरू कर दी हथियारों और रोड से लैस होने के बावजूद अपनी टूटती कमर और हौसले से पस्त हो चुकी चीनी सेना में भगदड़ मच गई ।उसके बाद परिस्थितियां धीरे–धीरे बिगड़ती चली गई। चीन ने लगातार अपनी सैनिकों की संख्या में इजाफा करना शुरू कर दिया ।भारत ने भी तत्काल कार्यवाही करते हुए सीमा पर सैनिकों की संख्या में तुरंत बढ़ोतरी की। दोनों तरफ से युद्ध के साजो सामान लगातार सीमा पर पहुंचाए जाने लगे। वर्तमान स्थिति यह है कि दोनों तरफ भारी संख्या में सैनिक और सैन्य सामग्री एकत्रित हो चुकी है । टैंको की गड़गड़ाहट और युद्धक जहाजों की आवाजों से पूरा क्षेत्र गूंज रहा है। अरुणाचल प्रदेश से लेकर नेपाल तक चीन अपनी साजिशों में जुटा है। एक तरफ जहां सीमा विवाद को हल करने के लिए चीन और भारत के बीच बैठकों के दौर चल रहे हैं। वहीं दूसरी ओर चीन अपनी घृणित साजिश से बाज नहीं आ रहा है। अभी तक हुई सभी बैठकों में भारत ने अपना पक्ष स्पष्ट कर दिया है कि जब तक चीनी सेना अप्रैल से पूर्व स्थिति में वापस नहीं लौट जाती तब तक भारतीय सेना अपनी गतिविधियों में ना तो कोई कमी करेगी और ना ही पीछे हटेगी । चीनी चांडाल हर प्रकार से भारतीय सेना को हटाने की कार्यवाही कर रहे हैं बड़े–बड़े ध्वनि यंत्रों द्वारा अत्यधिक शोर उत्पन्न कर रहे हैं ।दूसरी ओर चीनी मुख पत्र ग्लोबल टाइम्स के माध्यम से भारतीय सेना को धमकियां दे रहे हैं और 1962 की जंग का हवाला दे रहे हैं। साथ ही विभिन्न युद्ध के वीडियो आदि के माध्यम से भारतीय सेना के मनोबल को विचलित करने का प्रयास कर रहे हैं। दूसरी ओर चीन का पिट्ठू पाकिस्तान एलओसी (भारत पाकिस्तान सीमा) पर पाकिस्तानी क्षेत्र में तथा पाक अधिकृत कश्मीर में भारी संख्या में सेना और युद्धक सामग्रियों को एकत्रित कर चुका है। पाकिस्तान की ओर से सीमा पर प्रतिदिन सीजफायर का उल्लंघन किया जाता है पाकिस्तान इन साजिशों के माध्यम से आतंकवादियों को भारत में प्रवेश कराना चाहता है। परंतु भारतीय सेना की मुस्तैदी के कारण वह अपने प्रयासों में निरंतर असफल हो रहा है ।एक तरफ से एलएसी और दूसरी तरफ से एलओसी पर दोहरे युद्ध की परिस्थितियां उत्पन्न हो रही है। भारतीय सेना पूरी तरह से दोनों ही सीमाओं पर युद्ध लड़ने में सक्षम है। समुद्री क्षेत्र में भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान चीन पर दबाव बना रहे हैं अर्थात सीमाओं की सुरक्षा के लिए हमारी सेना पूरी तरह सक्षम एवं तैनात है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने सेना को परिस्थितियों के हिसाब से एलएसी पर कार्यवाही करने की छूट पहले ही दे दी थी। इतना ही नहीं चीन के 124 एप्स को भी भारत सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया है। देश के विभिन्न देशभक्त व्यापारी संगठनों ने भी चीनी सामानों का बहिष्कार किया है ।चीन जिसकी कंपनियां सभी देशों में अपने लोगों के द्वारा जासूसी का कार्य करवाती है, इतना ही नहीं चीन पी एल ए भी एक व्यापारिक संगठन के रूप में कार्य करती है। इन सब कार्यवाहियों के ऊपर रोकथाम के लिए भारत सरकार ने भारत में चीन द्वारा किए जा रहे अंधाधुंध निवेश की संपूर्ण निगरानी करने हेतु भी सजग कदम उठा लिए हैं। अब चीन की कोई भी कंपनी बगैर सरकारी जांच के भारत में निवेश नहीं कर सकती। भारतीय रेलवे से लेकर सड़क संगठन तथा अन्य राज्यों की सरकारों ने भी चीन के विभिन्न केंद्रों को प्रतिबंधित कर दिया है। इन सब कार्यवाही के कारण चीन पूरी तरह बौखला गया है। उधर एलएसी पर गलवान में मार खाने के बाद चीन के ब्लैक टॉप आदि ऊंचाई वाले स्थानों पर काबिज होने के लिए सेना भेजी।परन्तु उन चोटियों पर भारतीय सूरमा पहले ही काबिज हो चुके थे । वहां भी चीनी चमगादडों को मुंह की खानी पड़ी और जान बचाकर वापस भागना पड़ा। आज स्थिति यह है कि बैंकों ने इलाके की समस्त ऊंचाई वाली चोटियों जैसे ब्लैक टॉप हेलमेट टॉप आदि पर भारतीय सेना पूर्णता मुस्तैद है। युद्ध के सभी साजो सामान के साथ भारतीय सेना ऊंचाई पर है ,और चीन नीचे ।हर प्रकार से भारतीय सेना युद्ध क्षेत्र में चीन को चुनौती देने की संपूर्ण रूपरेखा बना चुकी है और चीन की सभी साजिशों का मुंहतोड़ जवाब देने की तैयारी कर चुकी है। स्थिति यह बन चुकी है कि एलएसी की हाड़ कंपा देने वाली ठंड से चीन के बहुत से सिपाही मर गए। अब चीन वहां दो शिफ्टों में सेना की तैनाती कर रहा है। समस्त विश्व जानता है कि पहाड़ी क्षेत्रों में भारतीय सेना के समान विश्व की कोई सेना नहीं। सियाचिन जैसी ठंड में जो संभवतः दुनिया का सबसे ऊंचा रण क्षेत्र है। भारतीय सेना वहां भी पूरी क्षमता और सहजता के साथ देश की सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिए समर्पित रहती है। हम सब भारतीय पूरी कर्तव्य निष्ठा के साथ अपनी सेनाओं को शत–शत नमन करते हैं।

तरूण सिंह

समृद्ध भारत

झाँकी

भारत चीन के टकराव को चित्रों के माध्यम से देखिये

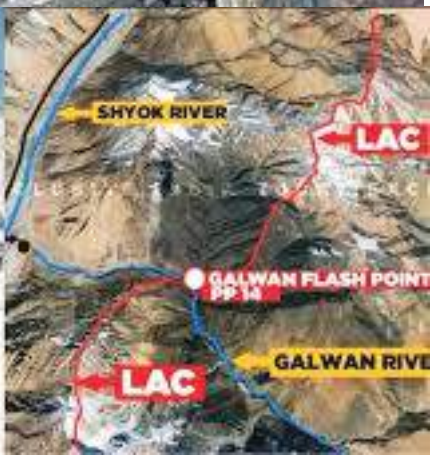

समृद्ध भारत

झाँकी

अजरबैजान और आर्मेनिया के बीच 23 दिनों से जारी युद्ध जिसमे अबतक 57 हजार नागरिकों की मृत्यु हो चुकी है। वीभत्स्य चित्रों को देखिये :–